Kalindi
Prakashan

भारतीय शिक्षा और आचार्य परम्परा

Indian Education and Acharya tradition

डॉ. अमित कुमार दूबे
डॉ. भावना सिंह

भारतीय शिक्षा और आचार्य परम्परा

Indian education and Acharya tradition

डॉ. अमित कुमार दुबे
डॉ. भावना सिंह

कालिन्दी प्रकाशन
kalindiprakashan@gmail.com
Aira Bujurg, Azamgarh, U.P.

Published by :

कालिन्दी प्रकाशन

kalindiprakashan@gmail.com

Aira Bujurg, Azamgarh, U.P.

Mo. : +91 9140270320; +91 9453904139

© 2025 Dr. Amit Kumar Dubey, Dr. Bhavna Singh

Title : Indian education and Acharya tradition

ISBN: 978-81-979932-6-8

MRP: ₹ 570/-

Cover design & Type Setting: Sumit Computer, Indore

PRINTED IN INDIA

Published by Dr. Amit Kumar Dubey for KALINDI PRAKASHAN, Azamgarh, (U.P)

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers

अनुक्रमणिका

स.क्र.	विषयवस्तु	पृ.क्र.
	सम्पादकीय	3
1.	स्वामी दयानन्द सरस्वती मृत्युंजय कुमार, डॉ. बी. एस० गुप्ता	9
2.	आधुनिक भारत के महान शिक्षाविद् एवं समाज सुधारक : महात्मा ज्योतिबा फुले प्रमोद कुमार	18
3.	स्त्री शिक्षा एवं सशक्तीकरण की प्रणेता: सावित्रीबाई फुले डॉ. सविता राय	30
4.	पंडित मदनमोहन मालवीय: एक महान शिक्षाविद और राष्ट्रनायक डॉ निशा अग्रवाल	37
5.	महात्मा गाँधी: बुनियादी शिक्षा मंजरी गोंड	42
6.	स्वामी विवेकानंद का जीवन-परिचय डॉ. रीतू रानी	48
7.	श्री अरविन्द घोष अमित पण्डा	55
8.	गिजु भाई बधेका डॉ. शिखा	66
9.	डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन डॉ. रेणु सिंह	75

10.	डॉ. भीम राव अंबेडकर : शैक्षिक विचार रुक्मिणी सिंह	85
11.	जिदू कृष्णमूर्ति : आधुनिक भारत के शैक्षिक विचारक अनुताई व्यंकटराव सुरकार, डॉ. विद्यानंद स. खंडागळे	92
12.	साम्ययोगी आचार्य विनोबा भावे डॉ. बद्री नारायण मिश्र, डॉ. विमल सिंह	102
13.	पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक चिंतन डॉ कैलाश चन्द मीणा	112
14.	आधुनिक शिक्षा के अग्रदूत: मौलाना अबुल कलाम आजाद डॉ. प्रदीप कुमार	117
	पाश्चात्य विचारक	
15.	सुकरात: एक महान दार्शनिक प्रमोद कुमार	130
16.	अरस्तू वर्षा कुमारी डनसेना	134
17.	प्लेटो का शिक्षा दर्शन अनीता मौर्या	141
18.	जीन जैक्स रुसो (Jean& Jacques Rousseau) शिखा सिंह, डॉ. बी. एस. गुप्ता	147
19.	पालो फ्रेरा (PAUL FREIRE) डॉ. भुपेन्द्र कौर	155
20.	हरवर्ट स्पेन्सर: एक समाजशास्त्रीय विचारक डॉ. सीमा रानी	163

Indian & Western Thinkers		
21.	**Ishwar Chandra Vidyasagar: Pioneering Education and Empowerment for Indian Women** Vijai Luxmi Yadav	168
22.	**Osho: as an Educational Thinker and His Contribution to Education in India** Dr. Richa Rana	187
23.	**Swami Vivekananda** Juhi Bidhuri	195
24.	**Sri Aurobindo's Educational Philosophy/His Contribution to Indian Education.** S.K. Swain, Priyanka Tripathi	205
25.	**The Views and Vision of Dr A.P.J. Abdul Kalam for Modern Education in India** Girish Chandra Behera, Pranati Priyadarshini	216
26.	**Dr. Zakir Hussain** Anees Ahamad Khan	233
27.	**Contribution Of R Maria Montessori In The Education Of Young Children** Professor Rajkumari Singh	241

पालो फ्रेरा
(PAUL FREIRE)

डॉ. भुपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)
Email:srsingh2472@gmail.com

जीवन की झलक (GLIMPSE OF LIFE)

पालो फ्रेरा का जन्म रैसिफ उत्तर-पूर्वी ब्राजील का एक छोटा-सा नगर है। फ्रेरा ने जिस परिवार में जन्म लिया वह मध्यम वर्गीय परिवार था। किन्तु सन् 1921 में शेयर बाजार में भारी गिरावट के कारण ब्राजील की अर्थव्यवस्था चैपट हो गई। उस काल में फ्रेरा के परिवार में दो टाइम का भोजन मिलना भी कठिन हो गया।

पालो फ्रेरा की प्रारम्भिक शिक्षा रेसिफ के स्कूल में हुई। किन्तु सन् 1929 के आर्थिक संकट के बाद फ्रेरा स्कूल में नियमित रूप से पढाई नही कर पा रहे थे। स्कूल में वे पीछे रह गये। फ्रेरा ने देखा कि उस समय उसके स्कूल के कुछ मित्र खाने के लिए तरस रहे थे तो कुछ के पास खाने के लिए और पहनने के लिए कमी बिल्कुल नही थी। उस समय फ्रेरा के मन में शंका हुई कि ईश्वर कुछ को गरीब और कुछ को अमीर क्यो बनाता है। बाद में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि गरीबी-अमीरी ईश्वर प्रदत्त न होकर सामाजिक वर्गभेद के कारण है। फिर भी वे इसका वास्तविक कारण खोज नहीं पा रहे थे। ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में ही उन्होंने एक कठिन शपथ ले ली कि दुनिया से भूख को कम करने के लिए वे सभी सम्भव उपाय करेंगे।

सन् 1959 में फ्रेरा ने रैसिफ विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की और उसी विश्वविद्यालय में शिक्षा के इतिहास तथा दर्शन के प्रोफेसर नियुक्त हो गये। इसके बाद उन्होंने साक्षरता का कार्यक्रम प्रारम्भ किया।

सन् 1964 में ब्राजील का नियन्त्रण सेना के एक गुट के हाथ में आ गया। फ्रेरा का जनजागरण आन्दोलन सैनिकों को कैसे अच्छा लग सकता था। फ्रेरा को बन्दी बना लिया गया और कारावास में डाल दिया गया।

जीवन के आगे के पन्द्रह वर्ष फ्रेरा ने देश निकाला में बिताया। सन् 1979 में ब्राजील में जब आम माफी की घोषणा हुई तो वे अपने देश वापस आये।

फ्रेरा चिली में कुछ दिन रहे, बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका मे रहे। फिर जेनेवा में स्थायी रूप से बसने के लिए चले गये। जेनेवा में वर्ल्ड कौंसिल फार चर्चेज के शिक्षा विभाग के लिए

उन्होंने कार्य किया। सारी दुनिया का उन्होंने भ्रमण किया। आस्ट्रेलिया, निकारगुआ, तंजानिया, मेक्सिको आदि देशों के साथ-साथ उन्होंने भारत का भी भ्रमण किया और सभी जगह साक्षरता कार्यक्रमों को व्यवस्थित करने में उन्होंने सहायता की।

साओ पालो ब्राजील का एक बहुत बडा नगर हैं। पाला फ्रेरा आजकल वहाँ के शिक्षा सचिव हैं। साओ पालो के मार्क्सवादी मेयर ने फ्रेरा को इस पद आमन्त्रित किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया।

दो घटनाएँ (TWO INCIDENTS)

फ्रेरा के जीवन पर दो घटनाओं का बहुत प्रभाव पडा। उन दोनों घटनाओं का वर्णन फ्रेरा के शब्दों में ही जो उन्होंने एक अमेंरिका की एक पत्रिका (ओम्नी पत्रिका) को दिये गये साक्षात्कार में उन्होंने कहा-

एक दिन मेरे भाइयों और मैंने अपने पडोसी की मुर्गी ली जो की हमारे बाडे में घूम रही थी। हमने उसे मार डाला। मेरी माँ ने मूर्गी के चीखने की आवाज सुनी और वह दौड कर आई। मैं सोच रहा था कि वह हम लोगों को दण्ड देगी, उस मूर्गी को पडोसी को लौटा देगी और उससे हम लोगों को क्षमा कर देने के लिए कहेगी। किन्तु उसने उसे उठाया, रसोई में गई और हम सबने उसे खाया। उस दिन दोपहर का भोजन कितना सुन्दर रहा, माँ बडी यथार्थवादी थी। उसकी मृत्यु के बाद काफी समय तक मैं इस घटना को भूले रहा। जब वह वहाँ खडी थी तो कभी मृत मुर्गी को देखती तो कभी कभी हम लोगों के चेहरे को। वह जब यह तय करने की कौशिश कर रही थी कि उस मुर्गी को लौटा दे या फिर हमें खिला दे। कई बार मुझे ताज्जुब हुआ है कि इस संकल्प में वह कितनी मानसिक हलचल से होकर गुजरी होगी।

एक अन्य महत्वपूर्ण घटना यह भी है। मेरी माँ मुझे किसी ऐसे स्कूल में प्रवेश दिलाना चाहती थी जिसमें पैसा न देना पडे। एक दिन इसी तलाश में दिन भर भटकती रही, फिर लौटकर बोली-"बेटे, मुझे एक ऐसा आदमी मिला है जो अपने स्कूल के दरवाजे तेरे लिए खोल देगा। बस उसकी एक शर्त और वह यह कि तुम पढने-लिखने को प्यार करो। " उस व्यक्ति ने मुझे अपने स्कूल में नाम लिखाने की अनुमति दे दी हालांकि मेरी माँ से उसका कोई परिचय नही था। वह स्कूल शहर के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से था। उस व्यक्ति ने अपने उदाहरण द्वारा मुझे यह दर्शाया कि दूसरों को प्यार करना क्या होता है। उसी ने मुझे दूसरों की सहायता करने का महत्व समझाया। मुझे इस कथन पर कभी विश्वास नही हुआ कि "मैं अपना निर्माता स्वयं हूँ। " अपना निर्माण स्वयं करने वाले व्यक्तियों का अस्तित्व नहीं है। शहर के जिन कोनों में तथाकथित स्वनिर्मित लोग रहते है, वहाँ बहुत से अनाम लोग छिपे रहते हैं। हम अपने आपकों अकेला नहीं रहने देना चाहते। मैंने अपने शिक्षण की समाप्ति उसी स्कूल में की थी। अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद मैंने उस व्यक्ति की बेटी से विवाह किया जिसने अपने दरवाजे मेरे लिए खोले थे।

फ्रेरा के उपर्युक्त वर्णन से यह निष्कर्ष सरलता से निकाला जा सकता है कि इन दोनों घटनाओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पडा है। उन दोनों घटनाओं ने फ्रेरा को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि दूसरों को प्यार किया जाये। दीन-दुखियों की सहायता की जाये। गरीबों की सेवा ही धर्म है। फ्रेरा ने गरीबी को बहुत निकट से देखा और प्रण किया कि वे संसार से भूख व गरीबी को दूर करने का प्रयास करेंगे।

फ्रेरा का शिक्षा-दर्शन (EDUCATIONAL PHILOSOPHY OF FRIERE)

मनुष्य व्यवहार किसी आवश्यकता के कारण ही करता है यहाँ तक कि भोजन करने की क्रिया में भी उसका उददेश्य भूख आन्तरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है। स्पष्ट है कि मनुष्य की सभी क्रियायें सोउददेश्य होती है। मनोवैज्ञानिक भी इस विषय में पूर्णतया सहमत है कि किसी भी व्यवहार का जन्म किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही होता है। यदि एक क्रिया से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है तो व्यक्ति अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए दूसरी क्रियायें करता है।

व्यक्ति जो क्रिया करता है। उससे उसे अनुभव प्राप्त होता है। इस अनुभव से उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। बचपन में हमारी आवश्यकताएँ सीमित होती हैं क्योंकि हमारे ज्ञान का क्षेत्र सीमित होता है। किन्तु जैसे-जैसे हमारा विकास होता है हमारी जानकारी का क्षेत्र भी बढता जाता है। हमारे अनुभवों में विविधता आती है। ज्ञान में वृद्धि होने के कारण हमारी आवश्यकताओं के क्षेत्र में भी वृद्धि हो जाती है। इन बढी हुई आवश्यकताओं की पूर्ति करने से हमारे अनुभवों में वृद्धि हो जाती है जिसके फलस्वरूप हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। उदाहरणार्थ-प्रारम्भ में हम केवल अक्षर ज्ञान सीखते हैं। अक्षर सीखने से हमारे ज्ञान के क्षेत्र का विकास होता है जिससे हमें अधिक जानने की आवश्यकता होती है। तब हम भाषा ज्ञान सीखते हैं तत्पश्चात् सरल साहित्य पढना सीखते हैं यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

आवश्यकता पूर्ति के लिए व्यक्ति में आन्तरिक प्रवत्तियों के रूप में जो प्रेरक विद्यमान रहते हैं यही प्रेरक व्यक्तित्व आवश्यकता कहलाता हैं। आवश्यकता का स्वरूप आन्तरिक प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत आवश्यकताओं में अन्तर पाया जाता हैं यहाँ तक कि साधनों को उपयोग में लाने के ढंग से भी अन्तर पाया जाता है। उदाहरणर्थ-यदि डॉक्टर बनने के लिए नीट की परीक्षा उत्तीर्ण करने की आवश्यकता है तो प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्रों की तैयारी में अन्तर पाया जाता जाता है। जैसे कोई सुबह पढेगा तो कोई कोई शाम को पढेगा, कोई ज्यादा पढेगा कोई कम पढेगा। प्रतियोगिता की तैयारी में यह अन्तर इसलिए पाया जाता है क्योंकि प्रत्येक छात्र की आवश्यकता पूर्ति करने के लिए प्रेरित करने वाली आन्तरिक प्रवत्तियों जैसे-प्रेरणा, मनोस्थिति, रूचि, शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं में भिन्नता पाई जाती है। अतः स्पष्ट है कि आवश्यकता का स्वरूप व्यक्ति की आन्तरिक प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है।

आवश्यकता पूर्ति के लिए, व्यक्ति वातावरण के साथ जो प्रतिक्रिया करता है यही प्रतिक्रिया शिक्षा प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्तित्व विकास का कारक है। औद्योगिक शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास में पारस्परिक निर्भरता है। इनके पारस्परिक सम्बन्ध को हम इस प्रकार समझ सकते हैं जैसे बचपन से ही व्यक्तित्व विकास की हमारी आवश्यकता होती है इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए शिक्षा ग्रहण करते है। शिक्षा प्राप्त करने से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। आवश्यकता ही हमारी शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करती है। शिक्षा के अनुसार ही हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व विकास के अनुरूप ही हमारी आवश्यकता का निर्माण होता है।

आवश्यकता पूर्ति के लिए साधन का ज्ञान हमें समाज से ही प्राप्त होता है इसके साथ हर साधन का स्वरूप भी समाज ही निर्धारित करता है। उदाहरणार्थ-शरीर ढकने के लिए हमें वस्त्र साधन का ज्ञान समाज से ही प्राप्त होता है इसके साथ ही वस्त्रों का का स्वरूप भी समाज ही निर्धारित करता है। जैसे-ग्रामीण समाज में छोटी उम्र से ही लडकियाँ साडी पहनना शुरू कर देती हैं और शहरी समाज में काफी उम्र तक लडकियाँ सलवार कुर्ता, स्कर्ट ब्लाउज तथा जीन्स टॉप आदि वस्त्र पहनती रहती हैं।

समाज में विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की विभिन्न स्तरों की योग्यता वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ-भवन निर्माण योजना में एक व्यक्ति नक्शा बनाता है दूसरा उसको क्रियान्वित करता है। इस योजना को पूरा करने के लिए हमें, दीवार बनाने वाले, फर्श बनाने वाले, छत बनाने वाले, वायरिग करने वाले, फिटिंग करने वाले, प्लम्बिंग करने वाले तथा सफेदी करने वाले आदि विभिन्न प्रकार का कार्य करने वाले मिस्त्रियों की आवश्यकता होती है। एक मिस्त्री दूसरे प्रकार का कार्य करने वाले मिस्त्री का कार्य उचित ढंग से नही कर सकता है। इसलिए न केवल भवन निर्माण में बल्कि किसी भी योजना में मिस्त्रियों की ही अधिक आवश्यकता होती है। मिस्त्रियों की मानसिक योग्यता का स्तर सामान्य होता है क्योंकि इनके अपने कार्य को भली प्रकार से करने के लिए सोच-विचार की अपेक्षा कौशल की अधिक आवश्यकता होती हैं। इसी प्रकार के सामान्य योग्यता वाले व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण देकर कुशल मिस्त्रियों (तकनीशियनों) को तैयार करने के उददेश्य से ही औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई है। बढते हुए औद्योगीकरण के कारण तकनीकी शिक्षा का महत्व दिन-प्रतिदिन बढता ही जा रहा है। पिछले चार दशकों में तकनीकी शिक्षा संस्थानों का काफी विकास हुआ है और भविष्य में भी होने की सम्भावना है।

भूख व अन्य दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभी को करनी है। हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि व्यक्ति साक्षर व शिक्षित होकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति अच्छी तरह से कर सके।

फ्रेरा का जीवन-दर्शन ईसामसीह के जीवन व दर्शन से प्रभावित था। वे ईसामसीह के सच्चे अनुयायी थे और शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहते थे।

फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श (EDUCATIONAL IDEALS OF FRIERE)

आधुनिक विश्व में अनेकानेक विषम परिस्थितियों की तरह आच्छादित है। अपने स्वयं के तुच्छ स्वार्थ से व्यक्ति इतना ग्रसित है कि वह दूसरों को क्षति पहुँचाने में लैशमात्र भी संकोच नही कर पा रहा हैं। अनेकानेक मानसिक यातनाओं और कुपरिस्थितियों से वह ग्रसित है। वैज्ञानिक प्रगति के बाद भी मानव को आत्मीय-शान्ति नही है। वह स्वनिर्मित वस्तुओं का कृतदास हो गया है। 'सामाजिक न्याय' का सम्प्रत्यय विकसित नही हो पाया है, जिसके कारण मानवीय दृष्टिकोण संकुचित और एकांगी हो गया है। यही कारण है कि वह अपने तुच्छ स्वार्थ की खातिर दूसरों की आवश्यकताओं को नहीं समझ पाता और अन्याय हो जाता है। आज हम समाजवाद की बात करते हैं। समाजवाद और पूँजीवाद दोनों की कल्पना आर्थिक मनुष्य की कल्पना है, जो धर्म और काम को एकमात्र पुरूषार्थ मानती है, लेकिन 'आर्थिक मनुष्य' एक अमूर्त प्रत्यय है। मानवतावाद अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों पुरूषार्थ को महत्व देकर सम्पूर्ण मानव (Whole Man) को इकाई मानकर चलता है। शिक्षालयों में छात्रों और अध्यापकों की अनेकानेक समस्याएँ हैं। आये दिन घेराव, घरना, तोड-फोड, मार-पीट इत्यिादि अभद्रताएँ हो रही हैं। इसका कारण मानवतावादी शिक्षा का अभाव है। मानवतावादी शिक्षा द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में सौहार्द्र, प्रेम, करूणा, मुद्रिता का संचार होगा और सर्वत्र शान्ति और भ्रातृत्व होगा।

फ्रेरा ने ठीक ही कहा है कि निरंकुश राज्य और सम्पन्न लोग नहीं चाहते कि किसान पढने की प्रक्रिया में खडे हों। शिक्षा का आदर्श दलितों, किसानों, मजदूरों को साक्षर व शिक्षित करना आवश्यक है। मानवतावाद का यही संदेश है। वैसे, मानवतावाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन शिक्षाविद् एफ. जे. नीथ हैमर (F.J. Neith Hamer) ने ऐसे शिक्षा दर्शन के अर्थ में किया था जो विद्यालय पाठ्यक्रम के रूप में क्लासिक साहित्य के पठन-पाठन का समर्थन करता है। 14वीं सदी से 16वीं सदी का काल यूरोप के इतिहास में पुनर्जागरण काल है जिस काल में शिक्षा में मानवतावाद ने जोर पकडा, यह शास्त्रीय मानवतावाद था। फ्रेरा ने जिस मानवतावाद को अपनाया वह आज के मजदूर व दलित वर्ग के प्रति प्रेम से परिपूर्ण है।

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप मनुष्य मशीन के पुर्जे के सदृश्य हो गया जिससे विद्रोह की भावना का संचार हुआ। नगरीकरण औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप मनुष्य का क्रन्दन या चीख यानि आर्तनाद ही मानवतावाद कहा जायेगा। मानवतावाद कल्पनाओं में नहीं बाह्य जगत् में अस्तित्ववान है। वह विचारों, शुभाकांक्षओं एवं सद्भावनाओं से ओत-प्रोत है। शिक्षा का यही उददेश्य होना चाहिए।

पाठ्यक्रम (CURRICULUM)

फ्रेरा ने पाठ्यक्रम में आमूलचूल परिवर्तन की बात की है। वे ईसामसीह से प्रभावित थे और धार्मिक पुस्तकों के पठन-पाठन को आवश्यक समझते थे। बाद में वे मार्क्स की ओर आकर्षित हुए किन्तु मार्क्स के सिद्धान्तों को आँख मूँदकर स्वीकार नही कर पाये। मार्क्स की

अनेक बातों से फ्रेरा असहमत थे। और उनकी आलोचना भी उन्होंने की। मार्क्स से वे प्रेरित हुए और अन्होंने सभी छात्रों को मार्क्स के अनुसार सामाजिक अन्तविरोधीयों को समझने का परामर्श दिया।

फ्रेरा सार्त्र, एरिक फ्रॉन, माओं, मार्टिन लूथर किंग के विचारों को पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहते थे। फ्रांज फैनल की पुस्तक 'ससार के अभागे लोग' (दरैचिड ऑफ द अर्थ) से वे बहुत प्रभावित थे।

गणित, इतिहास, भूगोल को पढाना है किन्तु प्रायः बालक इनमें फेल हो जाता है। हमें इनको सरल करके पढाना है।

फ्रेरा पाठ्यक्रम को पुनर्गठित करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कहा कि दार्शनिकों कला शिक्षकों, भौतिक विज्ञानियों, गणितज्ञों, समाजशास्त्रियों की सहायता की जरूरत है। पाठ्यक्रम को विस्तृत और उपयोगी बनाने के लिए इनकी सहायता कारगर सिद्ध होगी। शिक्षा, कला, नीतिशास्त्र, कामवासना, मानव अधिकार, खेल, सामाजिक वर्ग, भाषा, दार्शनिक विचारधारा जैसी ज्ञान की शाखाओं पर चर्चा होनी चाहिए जिससे पाठ्यक्रम की पुनर्रचना ठीक से हो सके। पाठ्यचर्या में अल्पसंख्यकों के मूल्यों को भी शामिल करना चाहिए।

फ्रेरा कहते है कि पाठ्यचर्या को जड, असंवेदनशील एवं अनुपयोगी नही होना चाहिए। प्रायः यह देखा जाता है कि पाठ्यक्रम इसके निर्माताओं के लाभ के लिए गठित किया जाता है न कि छात्र के लाभ के लिए।

सामान्य वर्ग के लिए जो पाठ्यक्रम आवश्यक होता है, सम्भव है प्रभुत्व सम्पन्न लोगों के लिए वह हितकारी न हो।

पाठ्यक्रम में समाजवाद व साम्यवाद के विचारों को आदरणीय स्थान देना चाहिए। फ्रेरा लोकतन्त्र के वास्तविक स्वरूप को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते है न कि उसके वर्तमान विकृत रूप को।

शिक्षण-विधि (METHOD OF TEACHING)

फ्रेरा के अनुसार," साक्षरता का कोई अर्थ तभी है जब निरक्षर व्यक्ति दुनिया में अपनी स्थिति, अपने काम और इस दुनिया में बदलाव लाने की अपनी क्षमता को लेकर सोचने लगे। यही चेतना है। उन्हें पता चले कि दुनिया उनकी है, प्रभुत्व सम्पन्न वर्ग की नही।"

साक्षर करने की शिक्षण-विधि जो फ्रेरा ने अपनाई वह आश्चर्यजनक थी। उनके अनुसार कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिन्हें प्रजनक या उत्पाद शब्द कहना चाहिए। झोपड-पटटी, वर्षा, जमीन, साइकिल आदि ऐसे शब्द हैं। ये उत्पादक शब्द भाव तथा अर्थ से स्पन्दित होते हैं ये शब्द सीखने वाले व्यक्तियों के समूह की इच्छा, आकांक्षा, माँग, चिन्ता, स्वपन, कुण्ठा को व्यक्त करते है। पुर्तगाली भाषा के मूल स्वनिम सिखने के लिए फ्रेरा के अनुसार पन्द्रह या अठारह शब्द पर्याप्त

प्रतीत होते हैं।

इस सन्दर्भ में फ्रेरा का कथन ध्यान देने योग्य है। यहाँ पर फ्रेरा के कथन से उद्धारण दिया जा रहा है।

"काफी प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए ईट शब्द को लीजिए। ईट के सभी पहलुओं की चर्चा करने के बाद हम उनके सामने शब्द रखते हैं-तिजोको फिर इसे अक्षरों में बाँटते है-ति-जो-को। इसके बाद हम स्वनिम-परिवार को लाते हैं-त-ते-ति-तो-तू, ज-जे-जि-जो-जू, ल-ले-लि-लो-लू। उच्चारण- ध्वनियों को समझते ही पूरा ग्रुप शब्द बनाने लगता है-तातू, लूता, (संघर्ष), लोजा (भण्डार), जैक्टो (जैट) इत्यादि। कुछ सहभागी किसी अक्षर से कोई स्वर ले लेते हैं, उसे किसी अन्य अक्षर के साथ लगाते हैं, फिर उसमें कोई तीसरा अक्षर जोडकर शब्द-निर्माण करते हैं। एक निरक्षर ने पहली ही रात कहा-तू जा ले (तुम पहले ही पढते हो)। एक संस्कृति-मण्डल में एक सहभागी ने पाँचवे दिन ब्लैक बोर्ड पर लिखा-ओं पावो रिजाल्वरोस प्रोब्लेमस दो ब्राजील वोतांदो कसीन्ते (जनता ब्राजील की समस्याओं को कुशल मतदान द्वारा हल कर लेगी)। आप इस तथ्य की व्याख्या कैसे करेंगे, कि एक आदमी जो अभी कुछ ही दिन पहले निरक्षर था, इतने जटिल स्वनिमों वाले शब्द कैसे लिखने लगा?

मैं आपको एक उदाहरण और दूँगा। मछुआरों के एक छोटे-से समुदाय मान्तों के सामने उत्पादक शब्द था-बोनितो (सुन्दर, जो एक मछली का नाम भी है। संकेत के तौर पर उन्होंने एक शहर का चित्र बनाया जिसमें मकान थे, मछली का शिकार करने की नावें थी और एक आदमी एक बोनितो (मछली) पकडे हुए था। एकाएक उनमें से चार लोग उठे और धीरे-धीरे चलकर दीवार तक गये जहाँ वह तस्वीर टँगी हुई थी। वे उसे कुछ देर तक ध्यान से देखते रहे, फिर खिडकी के पास जाकर कहा-''यह मान्तों मानो है और हमें इसकी जानकारी नहीं थी। " उस समय ऐसा मानो वे इस दुनिया को पहली बार समझने के लिए अपनी दुनिया से उबर रहे हैं। छात्र जो ज्ञान प्राप्त करते हैं उससे वे शक्ति-सम्पन्न बनते है। साक्षरता-कौशल अर्जित करके वे शक्ति-समपन्न नहीं बनते। कुछ साक्षरता पाठों के बाद एक किसान उठकर बोला-"इसके पहले हमें पता नही था कि हम जानते थे। अब हमें पता है कि हम जानते है। चूँकि आज हमें पता है कि हम जानते थे, अतः आज और ज्यादा जान सकते हैं। "

इस प्रकार फ्रेरा बच्चों की जिज्ञासा को शान्त करते हुए अपनी बात को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझते चलते हैं। किसानों को शिक्षित करने की फ्रेरा की विधि को आज सारा संसार प्रशंसा की दृष्टि से देखता है।

शिक्षण-विधि ऐसी होनी चाहिए जिससे सीखने वाला अपनी जिदगी के अनुभव से दूर न हो। उसे ऐसा न लगे कि उसकी भाषा, संस्कृति और परम्परा का शिक्षा निषेध करती है।

साक्षरता कार्यक्रम (LITERACY PROGRAMME)

फ्रेरा का सर्वप्रथम शैक्षिक कार्य उनके द्वारा संचालित साक्षरता का कार्यक्रम है। सन् 1968 के आसपास उनकी प्रसिद्ध पुस्तक संसार के समक्ष आई पुस्तक का नाम है 'दलितों का शिक्षण-विज्ञान' (पेडागाजी ऑफ द आप्रेस्ड)।

इस पुस्तक में फ्रेरा ने शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रमों के बारे में अपने सिद्धान्तों को लिखित रूप दिया है। इस पुस्तक में यह दर्शाया गया है कि हम मानवीय कैसे बन सकते हैं। तीसरी दुनिया को अब गन्दी बस्तियों में नहीं रहना है। उन्हें मानव के रूप रहना है। उन्हें साक्षर व शिक्षित भी होना है। निरक्षरता दमन का ही एक लक्षण है।

फ्रेरा ने जीवन भर साक्षरता कार्यक्रमों की परिकल्पना की। इन कार्यक्रमों को उन्होंने दक्षिणी अमेरिका, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप तथा आस्ट्रेलिया में लागू किया। साओ पालो नगर के शिक्षा सचिव के रूप में नियुक्त हुए। मजदूर दल के मेयर लुइस एरून्डीना के नियन्त्रण पर यह पद उन्होंने स्वीकार किया। इस पद पर रहकर उन्होंने विद्यालयों की व्यवस्था ठीक की और साक्षरता कार्यक्रम की प्रगति के लिए भी अनेक प्रकार के प्रयास किये।

'पेडागाजी ऑफ द आप्रेस्ड' में उन्होंने लिखा है कि लोग दलितों का निषेध करते हैं। लोगों ने दलितों से सोचने, प्रश्न करने का अधिकार छीन लिया हैं। जिज्ञासु होने का अधिकार स्त्री को है न कि केवल सम्पन्न लोगों को।

सत्तर के दशक में फ्रेरा पूर्वी जर्मनी में थे। वहाँ उन्हे किसी स्कूल को देखने की अनुमति नहीं मिली,उनकी पुस्तक, 'पेडागाजी ऑफ द आप्रेस्ड' पर रोक लगा दी गई थी। आज तो सारा संसार इस पुस्तक को पढ रहा है और इससे लाभान्वित हो रहा है किन्तु सत्तर के दशक में और अस्सी के दशक में भी कुछ जगहों पर इस पुस्तक को न पढने की सलाह दी जाती थी। इसे अच्छी पुस्तक न मानकर विषयुक्त माना जाता था। क्रान्तिकारी पुस्तक जो ठहरी।

ब्राजील में वोट देने का अधिकार सोलह वर्ष के किशोर-किशोरी को भी है। मताधिकार की सोलह वर्ष की आयु होने से ब्राजीलवासियों के लिए साक्षरता का विशेष महत्व हो गया है क्योंकि निरक्षरता किसी भी देश में जनतन्त्र के लिए अभिशाप है।

सन्दर्भ सूची-

- भटनागर सुरेश, कुमार मुनेन्द्र (2017) समकालीन भारत और शिक्षा, आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
- त्यागी गुरसरनदास, (2016), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।